nwda.gov.in

समुद्र उठ रहा है, हर 10वां शख्स खतरे में: रिपोर्ट

विश्व मौसम संगठन ने कहा, वॉर्मिंग 1.5 डिग्री तक सीमित रहे तो भी जलस्तर तीन मीटर तक उठेगा

■ विशेष संवाददाता, नई दिल्ली

ग्लोबल वॉर्मिंग के साथ बर्फ के पिघलने और इससे चढ़ता समुद्र का स्तर दुनिया के लिए बड़ा संकट है। विश्व मौसम संगठन (WMO) की रिपोर्ट के मुताबिक, इसका असर छोटे द्वीप देशों के साथ घनी आबादी वाले तटीय शहरों की 90 करोड़ आबादी पर पड़ेगा। यानी धरती पर रह रहा हर 10वां शख्स बड़ी मुश्किल में है। इनमें भारत, बांग्लादेश, चीन और नीदरलैंड्स जैसे देश के लोग शामिल हैं। रिपोर्ट कहती है कि बर्फ पिघलने और समुद्र का जलस्तर बढ़ने- दोनों के पीछे इंसानी गतिविधियां हैं।

रिपोर्ट में अनुमान जताया गया है कि ग्लोबल वॉर्मिंग 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य तक सीमित रहती है तो भी समुद्र का जलस्तर 2000 वर्षों में 2-3 मीटर बढ़ जाएगा। अगर वॉर्मिंग को 2 डिग्री तक सीमित रखा जाता है तो भी समुद्र 6 मीटर तक उठेगा। कहीं ग्लोबल वॉर्मिंग 5 डिग्री तक रही तो 2000 साल में समुद्र 19 से 22 मीटर तक उठ जाएगा। यह तटीय इलाकों के डूबने के साथ अर्थव्यवस्था, आजीविका, सेहत पर जोखिम बढ़ाएगा।

मुंबई संकट में: रिपोर्ट बताती है कि ग्लोबल वॉर्मिंग किसी भी सीमा में रहे, मुंबई (भारत), काहिरा (इजिप्ट), बैंकॉक (थाइलैंड), ढाका (बांग्लादेश), शंघाई (चीन), कोपेनहेगन (डेनमार्क), लंदन (ब्रिटेन), लॉस ऐंजिलिस (अमेरिका), ब्यूनस आयरिस (अर्जेंटीना) सहित हर महाद्वीप पर जलस्तर उठने का प्रभाव पड़ेगा।

मंडराती मुसीबत

- समुद्र में जलस्तर बढ़ने से तूफानों की तेजी बढ़ेगी। ज्वार-भाटा पर भी असर पड़ेगा।
- दुनियाभर के समुद्र पिछले सदी में अनुमान से कहीं तेजी से गर्म हुए हैं। साल 1971 से 2018 के बीच समुद्र के बढ़े जलस्तर में 50% हिस्सेदारी बढ़ते तापमान की रही है।
- साल 1992-99 और 2010-2019 के बीच बर्फ की परत का पिघलना चार गुना बढ़ा है।
- अगर ग्लोबल वॉर्मिंग 1.5 से 2 डिग्री के बीच भी रहती है तो भी फूड सिक्योरिटी खतरे में पड़ जाएगी।